IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

सनातन धर्म : एक विहंगम विवेचन

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना, अमेठी

tripathydrgaurav.gdc@gmail.com

सारांश

सनातन धर्म वैदिक व देवत तत्व के संयोग से बना है। यह हिंदुओं से सबंधित धर्म है । इसका आशय एक ऐसा धर्म है जो शाश्वत है।रामायण पुराण उपनिषद वेद आदि इसके मूल स्रोत हैं।वेद मे सनातन धर्म के चार स्रोत का वर्णन मिलता है।सनातन व्यवस्था के अन्तर्गत दो प्रकार के धर्म की परिचर्चा मिलती है।सनातन धर्म मे सत्य अहिंसा ब्रहचर्य,इंद्रिय निग्रह ,शील, मृदु वचन का बडा महत्व है।सनातन धर्म वर्ण धर्म का उल्लेख भी करता है।इसके अन्तर्गत वर्णों के लिए विहित कर्तब्यों का पालन करना जरूरी माना गया है।सनातन धर्म आश्रम धर्म के पालन पर जोर देता है।सनातन धर्म मे युग धर्म आपातकाल के धर्म व राजा के धर्म का पूरा वर्णन मिलता है।

मुख्य शब्द: सनातन, धर्म, वैदिक, उपनिषदीय परंपरा, वेदांग, वर्णाश्रम, आपद्धर्म, राजधर्म, युगधर्म , विशिष्ट धर्म , मनुस्मृति, नारदीयसूक्ति।